6. भारतीय सिनेमा के 70 वर्ष, पृष्ठ 126
7. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, विपिनचन्द्र, पृष्ठ 150
8. मेरी फिल्मी आत्मकथा, बलराज साहनी, पृष्ठ 13
9. भारतीय चलचित्र, महेन्द्र मित्तल, पृष्ठ 46
10. आज का सिनेमा, विजय अग्रवाल, पृष्ठ 21
11. इण्डियन सिनेमाटोग्राफ एक्ट 1819
12. भारतीय सिनेमा के 70 वर्ष, पृष्ठ 53
13. इण्डियन सिनेमा, फिरोज रंगुनवाला, पृष्ठ 63
14. आधी हकिकत आधा फसाना, प्रहलाद अग्रवाल, पृष्ठ 70
15. भारतीय सिनेमा का इतिहास, मनमोहन चड्ढा, पृष्ठ 96
16. भारतीय चलचित्र, महेन्द्र मित्तल, पृष्ठ 75
17. लिबर्टी एण्ड लाइसेंस इन द इण्डियन सिनेमा अरूणा वासुदेव, पृष्ठ 42
18. लिबर्टी एण्ड लाइसेंस इन द इण्डियन सिनेमा अरूणा वासुदेव, पृष्ठ 65
19. भारतीय सिनेमा का इतिहास, मनमोहन चड्ढा, पृष्ठ 112

मुस्लिम राजनीतिक चिंतन के विकास में 'सर सैयद अहमद खाँ की भूमिका

डॉ. नूरजबी

आठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में हीं भारत में यूरोप की जातियों का आगमन होने लगा। ये जातियाँ मुख्यतः व्यापार करने के उद्देश्य से भारत वर्ष आई थी, इसी सदी के उत्तरार्द्ध में इन विदेशीयों ने केन्द्रीय सत्ता के कमजोरी का लाभ उठाकर भारत की प्रसिद्ध शक्तियों को हटाकर अपनी सत्ता कायम कर ली और अंग्रेज भातर के शासक हो गये।

1857 ई0 में मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर को अंग्रेज ने गद्दी से हटा कर मुसलमानों की राजनीतिक तथा सामाजिक प्रतिष्ठा, धर्म, आर्थिक सम्पन्नता आदि को खतरे में डाल दिया। मुस्लीम समाज में सर्वत्र निराशा व्याप्त हो गई थी। भारतीय मुसलमान इसे सहजता से स्वीकार करने के लिए तैयार नही थे। मुस्लिम समाज के इसी संक्रमण की स्थिति में सुधार लाने के लिए कुछ मुसलमान नेताओं ने आंदोलन प्रारम्भ किया तथा उनके द्वारा वहाबी आंदोलन शुरू किया जो एक सामाजिक, धार्मिक आंदोलन था लेकिन इसका स्वस्थ्य राजनीतिक था। इस आंदोलन ने मुसलमानों में जागरण पैदा किया और उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के जड़ को भारत से उखाड़ फेंकने का असफल प्रयास किया। इस आंदोलन को पुनरूत्थानवादी एवं पश्चदृष्टि वाला घोषित कर दिया और मुसलमानों में कई ऐसे राजनेता एंव सुधारक पैदा हुये जिन्होंने मुसलमानों को आधुनिकतावादी दृष्टिकोण अपनाने को कहा और ब्रिटिश राज की नीतियों के कारण भारत में जो तथा कथित पुनर्जागरण पैदा हुआ था उसे अपनाने को कहा। ऐसे कुछ महान राजनीतिक चिंतकों में सर सैयद अहमद खाँ, मुहम्मद इकबाल, मौलाना अबुल कलाम आजाद एवं ओबेदुल्ला सिंधि प्रमुख थे जो मुसलमानों के राजनीतिक चिंतन को एक नयी दिशा प्रदान की।

मुस्लीम सम्प्रदाय में दो प्रकार नेता थे आधुनिकवादी तथा परम्परावादी। आधुनीकवादी पाश्चात्य ढ़ंग के अन्तर्गत शिक्षा पायी थी। दूसरी ओर पारपंरावादी मध्ययुगीन ढ़ंग से। आधुनिकवादी मुस्लीम विचारको का प्रभाव शिक्षित वर्ग पर था वही परपंरावादी नेताओं का प्रभाव निरक्षर, गरीब, कारिगरों, किसानों और मजदूरो पर।

आधुनिक काल में मुस्लिम राजनीतिक चिंतन के विकास में सर सैयद अहमद खाँ की महत्पवपूर्ण भूमिका रही है। सर सैयद अहमद 19वीं सदी के भारतीय मुस्लिम विचारकों मे अग्रणी माने जाते है। उनके विचारों ने प्रायः एक सदी

तक भारतीय मुस्लिम राजनीति को प्रभावित एवं अनुप्राणित किया। कई विचारकों ने सर सैयद अहमद की आलोचना की है। उनकी अवधारणा है कि भारतीय राष्ट्रवाद और स्वस्थ राजनीति के विकास में यह आंदोलन वाधक बना। इसने मुसलमानों को साम्प्रदायिक बना डाला और उन्हे हिन्दुओं तथा कॉग्रेस से पृथक रहने का मनोविज्ञान दिया।

पृथकता की भावना कई कारणो से उत्पन्न हुई। प्रथम, सर सैयद और उनका आंदोलन, दोनों प्रारंभ से ही अँगरेजो की कृपा और सहानुभूति पर निर्भर रहे और उनकी सहानुभूति तथा सहयोग पाने के लिए आवश्यक था कि राजनीति में प्रगतिशील हिन्दुओं के विरूद्ध मुसलमान अँग्रेजों की कूटनीति का समर्थन करें। मिस्टर बेग सैयद अहमद की पीठ पर हमेशा हावी रहा। वह 1883 ई0 से 1899 ई0 तक अलीगढ़ मोहम्मद ऐंग्लो ओरियंटल कॉलेज का प्रिंसिपल था। इस सम्पूर्ण लम्बी अवधि तक वह अदम्य उत्साह एवं उद्योग से काम करता रहा ताकि वह राष्ट्रीय आंदोलन से सैयद अहमद का साथ छुड़ा दे तथा मुसलमानों को हिन्दुओं से अलग रहने और अपने को ब्रिटिश सरकार के संरक्षणकारी पक्षो के अधीन रखेन का प्रवृत्त करें। वेग अपने प्रयत्न में बहुत सफल रहा। अतः अंग्रेजो पर निर्भर रहने अहमद हिन्दू धर्म और समाज सुधारकों के विपरीत पश्चिमी सभ्यता से आवश्यकता से अधिक प्रभावित हो गए थे और यही कारण था कि वे अंग्रेजो का समर्थन करने लगे थे। वे यह भूल गए कि भारत उनकी जन्म भूमि है और वे मुसलमानों के हीं नहीं, हिन्दूओं और अन्य वर्गो के भी नेता है। तृतीय, मुसलमान अल्पसंख्यक थे और सैयद अहमद को हमेशा यह भय बना रहता था कि बहुसंख्यक हिन्दू मुसलमानों का अहित कर सकते थे। इसी कारण पृथकत्व ने जन्म लिया और चिंतकों को सैयद अहमद के विचारों में संकीर्णता की झलक मिली। वे उनके विचारों को हिन्दू विरोधी मानने लगे। वास्तविकता यह थी कि सर सैयद अहमद चाहते थे कि हिन्दुओं की तरह मुसलमान भी प्रगति करें और भारत के समाज में प्रतिष्ठित स्थान बना लें। विपन चन्द्र ने उनकी एक अन्य गलत धारणा का उल्लेख किा। वे लिखते है कि सैयद अहमद खाँ की धारणा थी कि मुसलमानों के धार्मिक और सामाजिक जीवन में केवल आधुनिक पाश्चात्य वैज्ञानिक ज्ञान और संस्कृति को ग्रहण कर ही सुधार लाया जा सकता है। यही कारण था कि आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देना जीवन भर उनका सर्वप्रथम काम रहा और वे सुधार के अन्य पहलुओं को नजरअंदाज करते रहे।[1]

ताराचंद ने उनकी एक भूल का उल्लेख करते हुए लिखा है कि सैयद अहमद ने एक भूल यह कि उन्होंने मुस्लिम समाज को देश से ऊपर रखा उन्हें देश की महानता पर गर्व करना चाहिए था। इसके अतिरिक्त उन्होंने उच्च वर्ग के

मुसलमानों को आशा और भरोसा दिया और सामान्य मुसलमानों पर ध्यान नहीं दिया। यही कारण है कि अलीगढ़ नवजीवन–प्राप्त इस्लाम का केंद्र नहीं बन पाया और इसके विपरीत भारत में इन दोनों सम्प्रदायों के बीच अलगाव की भावना पैदा हो गई।

एम0एस0 जैन ने लिखा है कि अलीगढ़ कॉलेज ने सैयद अहमद के उद्देश्यों को भी पूरा नही किया। इस संस्था से निकले छात्र अपनी संस्कृति की रक्षा नहीं कर सके और पश्चिमी सभयता की चकाचौंध में अंधे हो गए। इसके अतिरिक्त सैयद अहमद के काल तक तो निश्चित रूप से यह संस्था कारगर सिद्ध न हो सकी। राम गोपाल ने लिखा है कि अलीगढ़ कॉलेज में पढ़ने के लिए मुसलमानों में कोई विशेष चाह अथवा उत्सुकता भी नहीं थी। भारत में 1898 ई0 से 1902 तक बी0ए0 पास करने वाले मुसलमान छात्रों की संख्या– 1,184 थी। इनमें से अलीगढ़ विश्वविद्यालय से 220, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 410, कलकत्ता विश्वविद्यालय से 398 और पंजाब विश्वविद्यालय में एक छात्र एम0ए0 में था, 1891–92 में दो रहे और अगले दो वर्षो में एक भी नही रहा, फिर 1894–95 में दो रहे। 1901–02 में फिर एक ही मुसलमान छात्र था और 1902–03 में एक भी नहीं। 1882 से 1887 ई0 तक मुसलमानों को सरकारी नौकरियाँ दिलाने के लिए जोरो का अभियान चला था। परंतु, इस काल में अलीगढ़ कॉलेज से केवल 10 स्नातक निकले थे।[2] इस प्रकार स्पष्ट है कि सर सैयद के जीवनकाल में शिक्षा की दृष्टि से अलीगढ़ आंदोलन के कारण ही मुसलमान उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके।

सर सैयद अहमद परिस्थिति की उपज थे। जिस काल में वे पैदा हुए थे उस काल में मुसलमानों की स्थिति ठीक नहीं थी। अतः, उनके लिए विशेष रूप से सोचना सैयद अहमद के लिए लाजिमी था। आधुनिक भारत के इतिहास में वे एक महान् नेता के रूप में याद किए जाते है। सी0एफ0ए0 एंड्रज ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुये लिखा :

'सर सैयद अहमद खाँ बड़प्पन, सिंह–सदृश्य शक्ति, उच्चादर्श तथा एक ऊँचे दिमाग का प्रवल जोश था। जितने भी मुसलमानों से मैं मिला, उनमें से किसी ने भी मुझे अपने चरिबल अथवा बौद्धिक महानता से इतना प्रभावित नहीं किया जितना सर सैयद अहमद खाँ ने किया। वह जहाँ भी जाते थे स्वाभाविक रूप से नेता मान लिए जाते थे। उनकी उपस्थिति तथा उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावोत्पादक था। वह मनुष्यों के जन्मजात नेता थे।[3] ताराचंद ने लिखा है कि :

'उन्होंने (सैयद अहमद) अपने गौरवमय नेतृत्व से मुस्लिम समाज को निराशा के कीचड़ से उबार लिया। उन्होंने उनके मन में दकियानुसी इल्म से हटाकर आधुनिक शिक्षा की ओर प्रवृत्त किया जिससे वह अपने देश के मामलों में

सही भाग लेने में समर्थ हुए। उन्होंने अँग्रेज शासकों के संदेह तथाशत्रुता को विश्वास तथा प्रेम में बदल दिया।[4] एस0सी0 सरकार के शब्दों में।

'उनके (सैयद अहमद) कार्यो और अलीगढ़ आंदोलन के द्वारा समूचे भारतीय इस्लाम में एक नए जीवन का संचार हुआ।[5]

प्रो0 अर्नोल्ड ने उन्हें, 'मुसलमानों का सबसे महान नेता' कहा है। वे राष्ट्रपुरूष थे अनेक अवसरो पर व्यक्त किए उनके उद्‌गार उन्हे राष्ट्रपुरूष सिद्ध करते हैं। आर0सी0मजुमदार ने लिखा है कि सर सैयद अहमद उत्साही देशभक्त और राष्ट्रीयतावादी थी।[6] सैयद अहमद ने एक बार कहा था :

'कोई राष्ट्र तब तक आदर तथा सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता जब तक वह शासन करेन वाली नस्ल के साथ समानता नहीं पा लेता तथा अपने देश की सरकार में हाथ नहीं बँटाता।[7]

सर सैयद अहमद पर साम्प्रदायिक होने का दोषारोपण किया जाता है। किन्तु, विद्वानों ने इसे गलत ठहराया है। विपनचन्द लिखते है कि अलीगढ़ कॉलेज के दरवाजे सभी भारतीयों के लिए (न कि सिर्फ मुसलमानों के लिए) खुले हुए थे। उदाहरण के लिए 1898 ई0 में कॉलेज में 64 हिन्दू और 285 मुसलमान छात्र थे। सात भारतीय शिक्षको में से दो हिन्दू थे जिनमें से एक संस्कृत का प्रोफेसर था। मगर 'अपने जीवन के अंतिम वर्षो के दौरान सैयद अपने अनुपयोगियों की उदीयमान राष्ट्रवादी आंदोलन में शामिल होने से रोकन के लिए हिन्दू आधिपत्य की बात करने लगे। वह दुर्भाग्यपूर्ण था क्योंकि वे मूलतः साम्प्रदायिक नहीं थे। वे केवल यह चाहते थे कि मुसलमानों के मध्यम और उच्च वर्गो का पिछड़ापन खत्म हो जाए।[8]

सर सैयद अहमद के आंदोलन का गहरा प्रभाव मुसलमानों पर पड़ा। सैयद अमीर अली, मौलवी चिराग अली, सर शेख मोहम्मद इकवाल, प्रो0 एस0 खुदाबख्स और प्रो0ए0एम0 मौलवी आदि इनके समर्थक थे जिन्होंने आंदोलन को जानदार बनाया। आंदोलन से प्रभावित होकर सम्प्रदाय की सेवा के लिए बहुत से अंजुमन कायम किए गए और एक शक्तिशाली मुस्लिम प्रेस का विकास हुआ। सुधार की भावना से मुस्लिम नारियाँ भी काफी दूर तक प्रभावित हुई। 1914 ई0 से अखिल भारतीय मुस्लिम महिलाओं की सभाएँ होने लगी। भोपाल की बेगम साहिवा ने 1918 ई0 में अखिल भारतीय नारी सभा का सभापतित्व किया। उन्होंने अपने राज्य में स्त्रियों के लिए बहुत – से सामाजिक तथा शिक्षा संबंधी सुधारों को चलाया। कुलीन तथा शिक्षित क्षेत्रों की प्रमुख महिलाओं ने पर्दा करना छोड़ दिया। वे उच्च शिक्षा ग्रहण करने लगी और राजनीति में भाग लेने लगी।

सर सैयद अहमद के अतिरिक्त मुसलमानों में आधुनिकता लाने का कार्य

कई अन्य मुस्लिम राजनेताओं एवं संस्थाओं ने भी किया। इस संदर्भ में देववंद आंदोलन ने विशिष्ट भूमिका निभायी।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. विपनचन्द्र, आधुनिक भारत, पृ0 176
2. धियोडोर मौरिसन, द हिस्ट्री ऑफ द मोहम्मद ऐंग्लो–ओरियंटल कॉलेज, अलीगढ़, फ्राम इट्स फाउण्डेशन टू द इयर 1903, पृ0 63, रामगोपाल, भारतीय मुसलमानों का राजनीतिक इतिहास पृ0 53–54
3. तारांचद, उद्धृत, पृ0. 335
4. वही, पृ0 333
5. आधुनिक भारतवर्ष का इतिहास पृ0 508
6. आर0सी0 मजुमदार, ब्रिटिश पारामाण्टयी, पृ0 317
7. वहीं
8. विपनचन्द्र, पृ0 179